डॉ0 भीमराव अम्बेडकर किस वर्ग के नायक और किसके खलनायक

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का जन्मदिन पूरे भारत में धूमधाम से मनाया जा रहा है। लगभग सर्वसम्मति बनी हुई है और कहीं कोई समीक्षा या आलोचना के स्वर नहीं सुनाई दे रहे। प्रश्न उठता है कि अम्बेडकर जी किस वर्ग के नायक के रुप में माने जा सकते है, और किस वर्ग के खलनायक के रुप में?

भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न वर्ग होते हैं। प्रवृत्ति के आधार पर दो वर्ग होते है–1. दैवीय प्रवृत्ति वाले 2. आसुरी प्रवृत्ति वाले। धर्म के आधार पर भी दो वर्ग होते है – 1. गुण प्रधान 2. पहचान प्रधान। सामाजिक कार्यो में संलग्न लोगों में भी दो वर्ग होते है– 1. संस्थागत कार्य करने वाले 2. संगठनात्मक स्वरुप वाले। आर्थिक आधार पर भी दो वर्ग होते है– 1. बुद्धिप्रधान 2. श्रम प्रधान। राजनैतिक आधार पर भी दो वर्ग होते है– 1. संचालक या शासक 2. शासित या संचालित। चूँकि अम्बेडकर जी जीवन भर राजनीतिज्ञ के रुप में कार्य करते रहे इसलिए हम अन्य वर्गो के आधार पर उनकी समीक्षा न करके राजनैतिक वर्ग विश्लेषण तक सीमित रहेंगे।

राजनीति में दो वर्ग होते है–1 शासक और 2 शासित। तानाशाही में शासक व्यक्ति होता है और मालिक के रुप में होता है। जबकि लोकस्वराज्य में शासक प्रतिनिधि होता है और प्रबंधक होता है, मैंनेजर होता है। जहॉ लोकतंत्र होता है वहॉ और विशेषकर भारतीय लोकतंत्र में शासक शासितों द्वारा चुने हुए व्यक्तियों का गुट होता है। यह गुट संरक्षक की भूमिका में होता है जबकि समाज इस गुट के अन्तर्गत संरक्षित होता है। शासक समाज को अयोग्य,नाबालिग मानकर अप्रत्यक्ष रुप से अपनी मालिक की भूमिका बनाता है। स्वतंत्रता के पूर्व भीमराव अम्बेडकर शासन की राजनीति करने वालों में सबसे प्रमुख व्यक्ति थे। भीमराव अम्बेडकर मे शासक के सारे गुण मौजूद थे। विलक्षण प्रतिभा थी,धूर्तता के चरण तक की कूटनीति थी तथा परिश्रम के मामले में भी अन्य सबसे आगे थे। स्वतंत्रता के पूर्व शीर्ष पर जो दो विचारधाराऍ थी, उनमें एक का नेतृत्व गॉधी के हाथ में था तो दूसरी का भीमराव अम्बेडकर के हाथ में। अन्य सब लोग तो बीच में इधर उधर होते रहते थे।

सफल राजनेता के आवश्यक गुणों में यह माना जाता है कि वह समाज को हमेशा विभिन्न वर्गो में बांटकर रखे,तथा उन्हें कभी एकजुट न होने दें। यहॉ तक कि सफलता के चर्मोत्कर्ष के लिए परिवार तक को बांटकर रखना आवश्यक माना जाता है। साथ ही लोकतंत्र में शासितों को धोखा देने के लिए अनेक प्रकार के नाटक भी करने पडते है। अम्बेडकर जी धोखा देने और नाटक करने में सिद्धहस्थ रहे। भीमराव अम्बेडकर जी ने प्रांरभ से ही अपने वर्ग की प्रसन्नता और सुविधा के लिए वह सब कुछ किया जो समाज को लम्बे समय तक गुलाम बनाकर रखने के लिए किसी नेता को करना चाहिए। यहॉ तक कि उन्होने अपने वर्ग की सुविधा के लिए गॉधी तक का विरोध किया। राजनैतिक वर्ग के मार्ग में गॉधी सबसे बडी बाधा थे। स्वतंत्रता मिलते ही राजनेताओं के लिए गॉधी एक बोझ बन गये थे। वह बोझ हटते ही राजनेताओं के वर्ग को पूरी छूट मिल गई और उस छूट का लाभ उठाकर भीमराव अम्बेडकर जी ने अपने वर्ग के लिए स्वतंत्रता पूर्वक सब कुछ करते हुए ऐसा मार्ग बना दिया कि वह वर्ग कई पीढ़ियों तक उसका लाभ उठा सकता है।

माना जाता है कि वर्तमान संविधान भीमराव अम्बेडकर जी के द्वारा ही बनाया हुआ है। इस संविधान में वह सब कुछ है तो राजनेताओं द्वारा समाज को अनंतकाल तक गुलाम बनाकर रखने के लिए होना चाहिए। समाज को समझाया जाता है कि संविधान तो भगवान का स्वरुप है। साथ ही संविधान में किसी भी प्रकार के फेरबदल का अंतिम अधिकार भी राजनेताओं ने अपने पास ही सुरक्षित रखा है। जो संविधान आज भारत में है, या धीरे धीरे उसको राजनेताओं ने फेरबदल करके जैसा बना दिया है, उसके अनुसार तो तंत्र पूरी तरह मालिक और लोक गुलाम से अधिक कोई हैसियत नहीं रखता। वोट देने के अतिरिक्त लोक के पास ऐसा कौन सा अधिकार है जिसमें तंत्र हस्तक्षेप न कर सके। हमारे अधिकार क्या हो यह तंत्र तय करेगा किन्तु उनके अपने अधिकार क्या हो यह वे स्वयं तय करेंगे। हमारा वेतन क्या हो यह वे तय करेंगे किन्तु उनका वेतन क्या हो यह भी वे ही तय कर लेंगे। वे हमसे कितना टैक्स वसूल सकते है इसकी कोई सीमा नहीं है दूसरी ओर वे अपनी सुविधाऍ कितनी बढा सकते है इसकी भी कोई सीमा नहीं है। स्पष्ट है कि वे संवैधानिक रुप से हमारे भाग्य विधाता है और हम उनके गुलाम प्रजा। संविधान ने परिवार व्यवस्था, गॉव व्यवस्था, को तो अपने मे से बाहर कर दिया। दूसरी ओर समाज तोडक जाति,धर्म,भाषा आदि को अपने अंदर समेट लिया। यह सारी योजना भीमराव अम्बेडकर जैसे चालाक मस्तिष्क की ही उपज थी, अन्यथा अन्य किसी के बस की बात नहीं थी। भीमराव अम्बेडकर जी प्रारंभ से ही महिला और पुरुष को दो वर्गो में विभाजित देखना चाहते थे और जीवन भर तथा मृत्यु तक उन्होने इस दिशा में सक्रियता दिखाई। हिन्दू कोड बिल भीमराव अम्बेडकर की एक ऐसी पहचान बन चुका है जो भारत के हिन्दुओं की छाती में तीर के समान लगातार घाव कर रहा है। भीमराव अम्बेडकर जी बुद्धिजीवियों का प्रतिनिधित्व करते थे और इसलिए उन्होने जीवन भर श्रम के साथ भी धोखा किया। श्रम और बुद्धि के बीच इतना बडा फर्क अम्बेडकर जी की ही देन है। भाषा के मामले में भी भीमराव अम्बेडकर जी अंग्रेजी प्रिय थे। यहॉ तक कि जब हिन्दी पर ज्यादा जोर दिया गया तो भीमराव अम्बेडकर जी ने संस्कृत की आवाज उठा कर हिन्दी भाषियों में फूट डालने का काम किया। इतनी चालाकी तो कोई शातिर दिमाग व्यक्ति ही कर सकता है।

कहॉ जाता है कि भीमराव अम्बेडकर जी और नेहरु में नहीं पटती थी। मैं स्पष्ट कर दूँ कि भीमराव अम्बेडकर जी प्रधानमंत्री बनने की प्रतिद्वंदिता में नेहरु और जिन्ना के खिलाफ थे। किन्तु समाज को गुलाम बनाकर और समाज को आपस में

तोडफोड कर रखने में तीनों एक साथ रहे । मैंने तो यहॉ तक सुना है कि प्रारंभ में भीमराव अम्बेडकर जी राजनैतिक नेतृत्व के लिए मुसलमान भी बनना चाहते थे। किन्तु जब वे नहीं बन सके और मुस्लिम नेतृत्व जिन्ना ने ले लिया तब भीमराव अम्बेडकर जी ने पिछडों का नेतृत्व करना शुरु किया। यहॉ तक कि पहला चुनाव भीमराव अम्बेडकर जी ने मुस्लिम लीग की सहायता से ही लडा था। बाद में वे कांग्रेस से चुनाव लडे और बाद में कांग्रेस के विरुद्ध भी चुनाव लडे और अंत में फिर बौद्ध भी बने। उन्होने सारे नाटक किये किन्तु प्रधानमंत्री बनने की उनकी इच्छा अंत तक अधूरी ही रह गई। वे महिलाओं के प्रमुख पक्ष धर माने जाते है किन्तु उनका अपनी पत्नि के साथ व्यवहार शोध का विषय है।

यह सही है कि भीमराव अम्बेडकर जी में विलक्षण प्रतिभा थी। परिस्थितियों को अपने पक्ष में करना वे अच्छी तरह जानते थे। उनके पिता राज कार्य में किसी पद पर थे। भीमराव अम्बेडकर जी में प्रारंभ से ही प्रतिभा थी। अब यह प्रतिभा उनके जन्म पूर्व के संस्कारों से आयी या पूर्व जन्म की संचित प्रतिभा थी या राज परिवार के संस्कारों से प्राप्त वातावरण की थी यह निष्कर्ष निकालना संभव नहीं। किन्तु उनमें प्रतिभा थी और उस प्रतिभा को तत्कालीन राज परिवार का अंध समर्थन मिला। यह बात सच है कि उन्होने इन सब परिस्थितियो का पूरा पूरा लाभ उठाया। सवर्ण ब्राहमण ने उन्हे पढाया, सवर्ण राजा ने उनकी सब प्रकार से सहायता की सवर्ण पत्नि ने जीवन भर उनका साथ दिया और भीमराव अम्बेडकर जी ने भी सवर्णो के हित में वह सब किया जो उन्हे नहीं करना चाहिए था। स्पष्ट दिख रहा था कि स्वतंत्रता के बाद सवर्ण और अवर्ण के बीच वह भेदभाव पूर्ण स्थिति नहीं रह सकती जो स्वतंत्रता के पूर्व थी। भीमराव अम्बेडकर जी ने बहुत चतुराई से मुट्ठी भर अवर्ण बुद्धिजीवियों को बहुसंख्यक सवर्ण बुद्धिजीवियों से समझौता करा दिया और उसका परिणाम हुआ कि 67 वर्षो बाद भी सवर्ण बहुमत सब प्रकार के लाभ उठा रहे है और अवर्ण बहुमत आज भी मट्टी खोदने से आगे बढने की स्थिति में नही है।

हम देख रहे है कि आज पूरे हिन्दुस्तान के सभी राजनेता, सभी धर्मगुरु चाहे सवर्ण हो या अवर्ण तथा सभी बुद्धिजीवी चाहे छोटे पद पर हो या बडे पद पर, एक स्वर से भीमराव अम्बेडकर जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहे है कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए सभी राजनेताओं तथा बुद्धिजीवियों में एक होड सी मची है कि कौन इस मामले में आगे निकल पाता है। चाहे मोदी हो या सोनिया राहुल, चाहे कम्युनिष्ट हो या नीतिश अरविंद , चाहे संघ प्रमुख हों या आजम खान हो, सभी एक स्वर से प्रशंसा में लगे है। मेरे विचार से उन्हे लगना भी चाहिए। क्योकि समाज को गुलाम बनाकर पीढियों तक रखने का जो मार्ग भीमराव अम्बेडकर जी ने दिया और जिस पर चलकर आज भी ये लोग अपने को स्थापित किये है उस मार्ग दृष्टा को सम्मानित न करना तो कृतघ्नता ही मानी जाएगी। सभी संविधान की दुहाई दे रहे है क्योकि संविधान ही तो वह दस्तावेज है जो समाज को गुलाम बनाकर रखने में तंत्र की ढाल बना हुआ है।

विचारणीय है कि आज समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई गॉधी दिख नहीं रहा और ऐसे प्रतिनिधित्व के अभाव में राजनेता मैदान में एक तरफा गोल मारे जा रहे है। यह अलग बात है कि इस एक तरफा गोल करने में उनके आपसी हित भी टकराते हो किन्तु कोई और गॉधी पैदा न हो जाये जो समाज को सशक्त करने का मार्ग प्रस्तुत कर दे , इस मामले में तंत्र से जुडे सब लोग एकजुट है। भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के बहाने ये सब लोग मिलकर अम्बेडकर जी को अपना नायक सिद्ध करने का पूरा प्रयास कर रहे है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में परिस्थितियॉ बदलेंगी और जब दूसरा पक्ष मालिक की भूमिका में आयेगा तब शायद भीमराव अम्बेडकर जी एक खलनायक के रुप में स्थापित हो सकेंगे।

कांग्रेस मुक्त भारत या संघ मुक्त भारत

भारतीय राजनीति में वर्तमान समय में तीन के बीच प्रतिस्पर्धा चल रही है– 1.नरेन्द्र मोदी 2. नीतिश कुमार 3. अरविंद केजरीवाल। यद्यपि इन तीनों में अरविंद केजरीवाल बहुत पीछे चल रहे है किन्तु अब तक वे दौड से बाहर नहीं हुये है। नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस मुक्त भारत का आहवान किया,तो नीतिश कुमार ने संघ मुक्त भारत का। अरविंद केजरीवाल मोदी मुक्त भारत तक सिमट कर रह गये हैं।

यदि हम गंभीर समीक्षा करें तो कांग्रेस मुक्त भारत के नारे का अब कोई औचित्य नहीं है। वैसे ही कांग्रेस अपने आप समाप्त हो रही है। फिर दूसरी बात यह भी है कि कांग्रेस कोई विचारधाराओं का संगठन न होकर एक परिवार विशेष द्वारा कुछ सत्ता लोलुप व्यक्तियों का बनाया हुआ संगठन था। मोदी और नीतिश जैसे विचारधारा के संगठनों के आगे आने के बाद कांग्रेस का स्वतः समापन निश्चित हो गया। नीतिश जी ने संघ मुक्त भारत का जो नारा दिया वह भी किसी के गले नहीं उतर रहा क्योकि साम्यवाद और कट्टरवादी मुस्लिम गठजोड के विरुद्ध प्रतिक्रियात्मक संगठन के रुप में संघ जिन्दा है। ऐसी स्थिति में संघ मुक्त भारत का नारा उचित नहीं दिखता बल्कि इस नारे में सिर्फ राजनैतिक स्वार्थ ही दिखता है। जिस तरह विकल्प दिखते ही कांग्रेस का औचित्य समाप्त दिखने लगा है उसी तरह साम्यवाद कट्टरवादी इस्लामिक गठजोड को छूट देकर संघ मुक्त भारत की मांग कैसे उचित कहीं जा सकती है। मैं जानता हूँ कि मोदी जी की कांग्रेस मुक्त भारत की आवाज सिर्फ राजनैतिक स्वार्थ से प्रेरित दिखती है और उसमें सामाजिक आवश्यकता का लेश मात्र भी संबंध नही दिखता। इसी तरह नीतिश कुमार की संघ मुक्त भारत की आवाज भी पूरी तरह राजनीति प्रेरित है, और भाजपा के विरुद्ध हताश निराश राजनेताओं के एकत्रिकरण के प्रयास से अधिक कुछ नहीं है।

मेरे विचार से मोदी जी को साम्यवाद मुक्त भारत का नारा देना चाहिए था। यद्यपि पूरी दुनिया से साम्यवाद कमजोर हो रहा है, किन्तु भारत में साम्यवाद कट्टरपंथी मुसलमानों के कंधे पर बन्दूक रखकर अपना अस्तित्व बचाए हुए है। साम्यवाद एक खतरनाक विचारधारा है और उसका समापन राजनैतिक दृष्टि से भी उचित है तथा सामाजिक दृष्टि से भी। इसी तरह नीतिश कुमार जी को साम्प्रदायिकता मुक्त भारत का नारा देना चाहिए था। साम्प्रदायिकता एक विचारधारा है और उसका समापन होना ही चाहिए। वर्तमान भारत के राजनैतिक वातावरण में तीन वर्ष पूर्व तक साम्प्रदायिकता का अर्थ अल्पसंख्यक तुष्टिकरण तक सीमित था। वर्तमान राजनैतिक वातावरण में साम्प्रदायिकता का अर्थ हिन्दू तुष्टिकरण के साथ जोडकर देखा जा रहा है। यदि साम्प्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठाई जाती तो नीतिश कुमार जी का संघ विरोधी मोर्चा बनाने का राजनैतिक उद्देश्य भी पूरा हो जाता और सामाजिक निष्पक्षता पर भी आंच नहीं आती। वैसे यदि नीतिश जी तानाशाही मुक्त भारत का नारा देते तो और भी अच्छा होता। एक ही तीर से दो शिकार हो जाते। अरविंद केजरीवाल जी पूरी तरह तानाशाह है ही दूसरी ओर नरेन्द्र मोदी जी अब तक उसी दिशा में चलते हुए दिख रहे है जबकि नीतिश कुमार इन दोनों के ठीक विपरीत लोकतांत्रिक दिशा में आगे बढ रहे है। यह नारा नीतिश के लिए बहुत उपयुक्त होता। मेरा विचार है कि मोदी जी और नीतिश कुमार को इस विषय में गम्भीरता से सोचना चाहिए। अरविंद केजरीवाल जी के बारे में मैं अभी तक कुछ कहने की स्थिति में नहीं हूँ क्योकि अभी तक उन्होने मोदी विरोध के अतिरिक्त कोई अलग से बात कहीं ही नहीं है जिसकी कोई समीक्षा की जा सके।

भारत में गहराता जल संकट

लगभग सम्पूर्ण भारत में इस भीषण गर्मी के मौसम में कुछ ज्यादा ही पानी की कमी का अनुभव हो रहा है। यहॉ तक कि अनेक शहरों में पीने के पानी का भी अभाव हो गया है। कहीं ट्रेन से पानी पहुचाना पड रहा है, तो कहीं पानी की राशनिग हो रही है।अप्रैल के प्रथम सप्ताह में मैं स्वयं दिल्ली गया था और बदरपुर में पॉच दिन रुका। दिल्ली में भी पॉच दिनों में पानी की कमी से मैं एक दिन भी स्नान नहीं कर सका। स्पष्ट है कि प्रतिवर्ष पानी की कमी हो रही है। इस वर्ष वर्षा कम होने के कारण इसका प्रभाव ज्यादा दिख रहा है। साथ ही अप्रैल माह में ही गर्मी कुछ अधिक होने के कारण पानी की कमी का प्रभाव और अधिक हो गया है।

स्वतंत्रता के बाद भारत की आबादी चार गुनी तक बढ चुकी है। इसके साथ साथ जीवन स्तर में भी काफी सुधार हुआ है। पुराने जमाने में प्रतिदिन पॉच व्यक्तियों के औसत परिवार में यदि सौ लीटर पानी खर्च होता था तो आज वह बढकर करीब चार पाच गुना तक अधिक खर्च हो रहा है। पुराने जमाने में जब पानी पर्याप्त था तब शौचक्रिया में कितना पानी खर्च होता था और आज जल संकट के बाद कितना यह आप सब जानते है। इस तरह पिछले 60–70 वर्षो में औसत पानी की खपत 20 से 30 गुना तक अधिक बढ गई है। सिंचाई के लिए भी पानी का खर्च बढा है, यह उसके अतिरिक्त है। दूसरी ओर प्राचीन समय में पानी तालाबों में इक्ट्ठा होता था जो गर्मी में काम आता था। आबादी तथा जीवन स्तर में सुधार के आधार पर ऐसे अनेक तालाब पाट दिये गये। पुराने समय में जंगल भी पानी अंदर सोखने के अच्छे श्रोत थे। जंगल भी लगातार घटे है। पुराने जमाने में घर कच्चे थे सडके कच्ची थी, रेल लाइने कम थी किन्तु अब इन सब क्षेत्रों का इतना ज्यादा विस्तार हुआ है कि परिणामस्वरुप पानी जमीन में और कम पहुचने लगा है। इस तरह पानी के मामले में खर्च निरंतर बढता गया और उपलब्धता निरंतर घटती गई। इसका स्वाभाविक परिणाम था कि भू–जल स्तर लगातार नीचे गया।

राजनीति का स्वाभाविक चरित्र होता है कि वह भले ही कोई समस्या प्राकृतिक हो या उसकी स्वयं की पैदा की हुई किन्तु वह हर हालत में उसका राजनैतिक लाभ उठाते हुये समाज को दोषी बताने लगती है तथा समाज के उपर नये नये कानून थोपती है। जल संकट कुछ तो प्राकृतिक है तथा कुछ राजनीति द्वारा विस्तारित। इस स्थिति का भी राजनेता लाभ उठाने का प्रयास करते है। हम देख रहे है कि पिछले दो महिने से सारे देश के पंच से लेकर प्रधानमंत्री तक जल संकट की भयावहता को बहुत बढा चढाकर प्रस्तुत कर रहे है और साथ में ऐसा भी दिखा रहे है कि जैसे वे उसके समाधान में लगे हुये हो, जबकि वे इस समस्या का कोई समाधन खोजने के लिए उत्सुक नहीं है। पानी संकट का यह ही समाधान है कि उसका स्तर बढे और खर्च घटें। लेकिन इस दिशा में कोई ठोस प्रगति नहीं हो रहीं। बल्कि इसके ठीक विपरीत जल संकट को बहुत बढा चढाकर इस तरह प्रस्तुत किया जा रहा है कि इसी बहाने करोडो अरबों रुपया सरकारी खजाने से निकाल लिया जाये। मैं देख रहा हूँ कि पानी का संकट प्रतिवर्ष बढ रहा है लेकिन इसका राजनैतिक हल्ला इस वर्ष आवश्यकता से कई गुना अधिक हो रहा है। हमारे छ0ग0 में ऐसा प्रचारित हो रहा है कि हमारे रामानुजगंज बलरामपुर जिले में अभूतपूर्व जल संकट आया हुआ है, जबकि सच्चाई इसके ठीक विपरीत है।

आखिर यह विचार करना होगा कि ऐसा अनुभव क्यों हो रहा है। मैं देख रहा हूँ कि हर प्रकार के कार्य, जो लोग स्वयं भी कर सकते है वे कार्य भी लोग स्वयं नहीं करते क्योकि सरकार ने वह कार्य अपने जिम्मे में ले लिया है। एक तो सरकारी मशीनरी में भारी भ्रष्टाचर है तथा उसमें उत्तरदायित्व की सोच भी नही है। परिणामस्वरुप जो काम सरकार जिम्मा लेती है वह ठीक ढंग से नहीं हो पाता। इसलिए समाज को कष्ट होता है और सरकार अपनी जिम्मेदारी से भागकर उसके लिए कभी प्रकृति को दोष देती है तो कभी समाज को। जहॉ पानी है उससे बहुत दूर शहरों की आबादी बढ रही हैं। सरकार उन्हें सस्ता और अच्छा पानी घर बैठे उपलब्ध कराने का आश्वासन भी देती है। स्वाभाविक है कि वह आश्वासन पूरा नहीं होता और उसके लिए हल्ला होता है। उस हल्ले को शांत करने के लिए सरकार अनापशनाप बजट खर्च करने लगती है। प्रश्न उठता है कि जिन शहरो में पानी की कमी है

वहॉ सस्ता पानी उपलब्ध कराने की जरुरत क्या है? क्यों नही वहॉ पानी का रेट इतना बढा दिया जाये कि कुछ लोग ऐसे स्थानों पर रहना शुरु कर दे जहॉ प्राकृतिक पानी उपलब्ध है? मुझे याद है कि हमारे दिल्ली के कुछ मित्रों ने एक बार सुझाव दिया था कि दिल्ली की हवा प्रदुषित है इसलिए कहीं दिल्ली से कुछ दूर अच्छे प्राकृतिक वातावरण में ऑफिस रखा जाये। कुछ ही दिनों बाद उन्हीं साथियों ने यह सुझाव दिया कि हमें अपना ऑफिस सेन्टर दिल्ली में रखना चाहिए क्योकि वह आवागमन की दृष्टि से अधिक सुविधाजनक है। मैं अभी तक नही समझ पा रहा कि जिस दिल्ली की हवा के लिए अरविंद केजरीवाल इतने चिंतित है उस दिल्ली में रहने वालों को कुछ अधिक पर्यावरण कर देने में क्या आपत्ति होगी। मैं देख रहा हूँ कि शहरों में पानी की बहुत कमी है किन्तु उन्ही शहरों में सडको के बीच में हरियाली होना भी बहुत आवश्यक है और स्वाभाविक है कि उस हरियाली को जिंदा रखने के लिए पानी भी आवश्यक है। मैं नहीं समझ पा रहा कि आप जहॉ रहना चाहते है वहीं हरियाली को लाया जाये या जहॉ हरियाली है वहॉ आपको जाकर रहना चाहिए। आपको शहर की सारी सुविधाए चाहिए और वहॉ होने वाले प्रदूषण को दूर करने के लिए उसी जगह आप को पेड पौधे भी चाहिए । भले ही जल संकट कितना भी हो किन्तु आपके पेड पौधों को भी पानी चाहिए और आपको अपने लिए भी पानी चाहिए । भले ही उसके लिए सैकडों किलोमीटर से ट्रेन से ढोकर पानी क्यों न लाना पडे। यहॉ तक कि आप ऐसे गर्मी के मौसम में इस तरह विशेष प्रयास से लाये गये पानी का अतिरिक्त मूल्य भी नहीं देना या लेना चाहते। क्या यह उचित नहीं होता कि जिन लोगों को अपने स्थान पर स्वच्छ हवा चाहिए ,स्वच्छ पानी चाहिए वे उसी के अनुसार तुलनात्मक रुप से अधिक पैसा खर्च करे। दिल्ली की सरकार ने राजनैतिक कारणों से सस्ता पानी देने का वादा करके वोट प्राप्त कर लिये। मोदी सरकार भी वोट प्राप्त करने के लिए ऐसा ही कर रही है। सभी राजनेता ऐसी परिस्थिति में नाटक भी शुरु कर देते है। कोई पानी बचाओं का नारा देता है तो कोई बिजली बचाओं का। कोई ऑड–इवन का नाटक करता है तो कोई पैदल ही संसद भवन तक जाने का। सबकी इच्छा एक ही है कि लोग पानी बिजली स्वच्छ हवा को बचाकर रखे जिससे इन नेताओं और इनके अधीनस्थों को इनकी कमी न हो। स्पष्ट है कि यह समस्या का समाधान नहीं है।

मेरे विचार में समस्या का एक समाधान न होकर हमें कई दिशाओं में एक साथ काम करना होगा। पानी को इतना महंगा कर दिया जाये कि पानी का अनावश्यक उपयोग कम हो जाये। साथ ही पानी का इस तरह एकत्रिकरण भी हो कि जल स्तर बढे। इसके साथ ही सरकारों को अपना तरीका भी बदलना चाहिए अर्थात् सरकार सारे काम अपने जिम्मे लेने की अपेक्षा न्याय और सुरक्षा के अतिरिक्त सारे काम लोगों को स्वतः करने दे और सरकार उस कार्य में सहायक की भूमिका में हो, उत्तरदायी की भूमिका में नहीं। सरकार जब उत्तरदायी हो जाती है तो आम लोगों में अधिक से अधिक मांगने की प्रवृति बढने लगती है भले ही उतनी आवश्यकता हो या न हो। वर्तमान जल अभाव का इतना हल्ला भी इस मांगने वाली प्रवृत्ति के बढने का कारण दिखती है। मांग और पूर्ति के स्वतंत्र संतुलन को विस्तार दीजिये। अधिक उपयोग को निरुत्साहित करने के लिए मूल्य वृद्धि कीजिए। शहरी आबादी को गावों की ओर जाने के लिए प्रोत्साहित करिये। यदि अनावश्यक नाटक करने की अपेक्षा चुपचाप कुछ ठोस कदम उठाये जाये तो ऐसे प्राकृतिक प्रकोप के दुष्परिणाम के समय भी संतुलन बनाये रखा जा सकता है।

प्रश्नोत्तर

1.डॉ. फतेह आलम,महाराष्ट्र, ई–मेल से।

प्रश्नः– आपके विचार पढे। आपने बडी इमानदारी से दीप रौशन किये है जो कि अति सत्य है परन्तु जिस मनुष्य के शरीर में स्वार्थ का भूत रहता हो और ऐसे मनुष्यों की संख्या असंख्य हो फिर कैसे क्या होगा? जब कानूनी व्यवस्था को कमजोर कर दिया जाये या कमजोर हो जाये एवं कानून के रक्षकों को घोडो की तरह मोडा जाता हो ऐसी बेबस परिस्थिति में और क्या होगा या और क्या हो सकता है? जिस राज्य देश में समाज ही की सोच अपराध जुर्म में डूबी हो फिर ऐसे राज्य देश की हालत और उन्नति कैसे और क्या होगा? मुझे लगता है कि सबसे पहले समाजो को अपना दिल बदलना होगा। सोच तथा विचार बदलते हुए अपने अंदर घुसे स्वार्थी भूतों को मारना होगा। जब समाज ठीक होगा तब सरकार भी ठीक होगी वरना कुछ भी ठीक होने जैसा संभव नहीं है। रही पोलिस विभाग की बातें तो जहॉ तक मेरी जानकारी समझ है वो ये है कि पोलिस विभाग को खराब करने वाले भी हम खुद है क्योंकि हमारे भीतर ही स्वार्थी भूत बैठा है और हम अपने भूतों को जिदा रखना ही अपना कर्तव्य समझते है भले ही देश और देशवासियों की परिस्थिति कैसी कुछ भी हों। आप अपने विचार देने का कष्ट करें।

उत्तरः– व्यक्ति तीन प्रकार के होते है–1. दैवीय प्रवृत्ति 2. मानवीय प्रवृत्ति 3. आसुरी प्रवृत्ति। दैवीय प्रवृत्ति अर्थात् सामाजिक। मानवीय प्रवृत्ति का अर्थ है असामाजिक। आसुरी प्रवृत्ति का अर्थ है– समाज विरोधी। दैवीय प्रवृत्ति की तुलना गाय से की जाती है तथा आसुरी प्रवृत्ति की तुलना शेर से की जाती है। मानवीय प्रवृत्ति का वह व्यक्ति माना जाता है जो गायों के बीच में गाय के समान हो और शेरो के बीच में शेर के समान हो। अर्थात् वह अच्छे लोगों के बीच अच्छा हो और बुरे लोगों के बीच बुरा हो। दैवीय प्रवृत्ति के व्यक्ति को शरीफ और आसुरी प्रवृत्ति वाले को धूर्त कहा जाता है। जब समाज में आसुरी प्रवृत्ति वाले मजबूत

हो तब व्यक्ति को समझदार होना चाहिए अर्थात् शराफत छोडकर बीच में रहना चाहिए। किन्तु जब अपराधी तत्व नियंत्रित हो तब व्यक्ति को गाय की प्रवृत्ति का होना चाहिए। अर्थात् शरीफ होना चाहिए। उस समय समझदारी की आवश्यकता नहीं होती।

जब समाज में सामान्य लोग असुरक्षा महसूस करते हो तब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सुरक्षा की चिंता करनी पड़ती है। यह कोई आदर्श स्थिति नहीं है किन्तु आपातकाल में ऐसा करना हमारी मजबूरी है। सामान्यतया अपनी सुरक्षा के लिए समाज कुछ लोगो को नियुक्त कर देता है जो समाज को समाज विरोधी तत्वों से सुरक्षा की गारण्टी देते है। ऐसी गारण्टी देने वालो को ही सरकार कहते है जिसके अन्तर्गत पुलिस भी आती है। यदि ये गारण्टी देने वाले कमजोर हो जाये या दुष्ट प्रवृत्ति वालो से समझौता कर ले या अपना काम छोडकर समाज की अन्य प्रकार की चिंता करना शुरु कर दे तब आपातकालीन स्थिति आ जाती है। ऐसे समय में समाज का स्वार्थी होना कोई गलत बात नहीं। स्वार्थी होना तब तक गलत नहीं जब तक वह किसी अन्य के प्रति अन्याय न करता हो अर्थात् गाय के समक्ष शेर की भूमिका में न आवे। आपके पत्र से मैं यह नहीं समझ सका की आप स्वयं को तीन में से किस श्रेणी में मानते है। दूसरी बात यह भी है कि आप जो संदेश दे रहे है वह तीन प्रकार के व्यक्तियों में से किस प्रकार के व्यक्तियों के लिए है या क्या आपका संदेश तीनों के लिए एक साथ है। यदि तीनों के लिए है और अपराधी प्रवृत्ति के लोग आपका संदेश न माने तो बाकी लोगों को क्या करना चाहिए यह आपने नहीं बताया। आप बताने की कृपा करें कि वर्तमान स्थिति में जब दुष्ट प्रवृत्ति के लोग मजबूत हो रहे हो तब हमें उन दुष्ट प्रवृत्ति वालों को नियंत्रित करने के लिए क्या करना चाहिए? गाय अपने को गाय के समान मानकर चलती रहे और शेर अपने को शेर के समान मानकर चलता रहे, तो क्या यह उचित होगा? गाय की रोटी यदि कुत्ता खा रहा है तो पहले कुत्ते से निपटना आवश्यक है अथवा गाय के लिए आंख पर पट्टी बांधकर आटा पीसना। आपने लिखा कि जब समाज ठीक होगा तब सरकार ठीक होगी वरना कुछ भी ठीक होना संभव नहीं। मैं नहीं समझा कि आपका आशय क्या है क्योंकि समाज में तो तीनों तरह के लोग है और ऐसी परिस्थिति में किसे ठीक करने की आवश्यकता है। फिर यह भी प्रश्न खडा है कि जब समाज को ही ठीक करना है तो यह काम कौन करेगा, कैसे करेगा। जिसे ठीक करना है वही गलत है तो हम उसे क्या सलाह दे रहे है? जो लोग बीच वाले है उनका तो हदय परिवर्तन किया जा सकता है किन्तु जो लोग हमारी शराफत का लाभ उठाकर अपराध कार्यो में लीन है उनके संबंध में आप क्या सोचते है? मेरा विचार है कि दुष्ट प्रवृत्ति वालों के साथ हमारी कुछ अलग नीति होनी चाहिये। हम सुधरेंगे जग सुधरेगा ऐसा कहने वाले किसी परिणाम तक नहीं पहुँच पाते और कोई समाधान भी नहीं दे पाते। क्योकि यदि दुष्ट प्रवृत्ति के लोग मजबूत है तो उनके सामने हम सुधरेंगे जग सुधरेगा कहने वाले को या तो धूर्त माना जायेगा या मूर्ख। समाज सुधर जाये लोग ठीक हो जाये यह तो परिणाम की कल्पना है किन्तु मार्ग क्या है यह पहले विचार करना आवश्यक है। पहले मार्ग मिले फिर मार्ग पर चला जाये तब परिणाम की चर्चा होनी चाहिए। आपकी समझ में यदि वर्तमान परिस्थितियों में अपराध वृद्धि अर्थात् समाज विरोधी तत्व शक्तिशाली है तो ऐसी परिस्थिति में प्राथमिकता के आधार पर आप जैसे लोगों की सोच समाज के लिए घातक ही होगी।

2. बेचू बी0ए0, कुशीनगर,उ0प्र0

प्रश्नः—हिन्दू धर्म में कहॉ गया है कि जहॉ नारी की पूजा होती है वहॉ देवता वास करते है। घर की लक्ष्मी नारी है । नारी के बिना घर भूत का डेरा है। नारी न हो तो पूरी श्रृष्टि थम जायेगी। जहॉ नारी की ये महत्ता है तो वही आदिकाल से देखा जाये तो हर युग में नारियों की पूजा होती रही है । आदि शक्ति देवी दुर्गा,सीता, गायत्री अनुसुईया आदि तमाम देवियों की बात करें तो नारी की यशकृति इस संसार से छिपी नहीं है। लेकिन आज तमाम रुढिवादिताएँ आडम्बर, अंधविश्वास के मकड़ जाल में नारियों की जहॉ बेतहासा दुर्दशा हुई है तो कहीं मन्दिरों में उनके प्रवेश को लेकर हो हल्ला मचा हैं। अब जब महिला जागरुक हुई है तो न्यायालय आगे आकर इस अन्याय के विरुद्ध नारियों के हक में फैसला सुनाने को विवश है, लेकिन अब भी दकियानूसी लोग मुँह बिचका रहे है।

बात चाहे केरल के सबरीमाता मंदिर की करें या महाराष्ट्र के शनि शिंगणापुर शनि मंदिर या कोल्हापुर के प्रसिद्ध मंदिर महालक्ष्मी मंदिर के गर्भगृह की। इन मंदिरों में नारियों का प्रवेश वर्जित हैं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट जहॉ केरल के सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश कर पूजा पाठ करने की याचिका पर विचार कर रहा है, वही महाराष्ट्र देव स्थान समिति श्री पूजक समिति व ग्यंवकेश्वर ,देव स्थान ट्रस्टे भी महिलाओं के प्रति उदारता दिखाने के प्रयास में है।

सबरीमाता मंदिर में रजोधर्म आयुवर्ग की महिलाओं के प्रवेश पर रोक पर सुप्रीम कोर्ट ने कहॉ कि हिन्दू धर्म पुरुष और महिलाओं में भेद नहीं करता। हिन्दू हिन्दू होता है चाहे वह महिला हो या पुरुष। ऐसे में पुरुषों को मंदिर में जाने की इजाजत क्यों और महिलाओं को क्यों नहीं। न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा की अध्यक्षता वाली पीठ ने यहॉ तक कहा कि भगवान शिव बिना शक्ति के एक कदम नहीं चल सकते और उनकी शक्ति पार्वती है,यह महिला शक्ति को दर्शाता है। पीठ ने यह भी कहा कि हम इस बात पर नहीं जाना चाहते है कि सबरीमाला मंदिर में भगवान को ब्रम्हचारी रुप में पूजा जाता है और वह नहीं चाहते कि 10 से 50 आयु वर्ग की महिलाएँ उनके पास आए। लेकिन हमें यह देखना होगा कि यह संविधान की कसौटी पर कितना खरा उतरता है। लेकिन कहीं देश के जगतगुरु शंकराचार्य, स्वामी स्वरुपानंद सरस्वती ने कहा कि शनि की पूजा करने से महिलाओं का हित नहीं होगा बल्कि अत्याचार दुराचार बढेंगे। आप इस तर्क को कहॉ तक जायज ठहरायेंगे।

जब सती प्रथा,बालविवाह,जमीदारी और छुआछूत आदि समाप्त हो सकते है तो यह क्यों नहीं? मैं आप से यह प्रश्न करना चाहता है कि क्या भारत में नारियों के प्रति इसी तरह के प्रतिबंध लगते रहेंगे। जुल्म व धर्म के बंधनों में सिर्फ नारी ही बंधती रहेंगी। इस मुद्दे पर क्या न्यायालय का हस्तक्षेप जरुरी है?

उत्तरः—आपने जो विचार व्यक्त किये है उन सबका उत्तर ज्ञानतत्व 312 पृष्ठ 11 से 26 तक विस्तृत रुप से दिया गया है। आपको यह ज्ञानतत्व भी गया है और यदि आपने उस उत्तर को पढने के बाद कुछ लिखा होता तो अधिक अच्छा होता। फिर भी मैं संक्षेप में कुछ लिख रहा हूँ।

यह विचार करना होगा कि परिवार एक प्राकृतिक इकाई है अथवा संगठन? परिवार स्वनिर्मित इकाई है अथवा सहमति से बनती है। महिला और पुरुष अलग अलग संगठन है अथवा परिवार रुपी एक संगठन के संयुक्त सदस्य। मेरे विचार में परिवार एक संगठन है सहमति से बनता है तथा परिवार का प्रत्येक सदस्य परिवार रुपी संगठन का एक संयुक्त सदस्य है, पृथक सदस्य नहीं। परिवार में शामिल होने के बाद व्यक्ति का सम्पूर्ण विलय हो जाता है और यह विलय तब तक रहता है जब तक व्यक्ति और परिवार के बीच आपसी सहमति है। यदि कोई व्यक्ति, चाहे वह महिला हो या पुरुष, यदि परिवार का सदस्य है तो उसे परिवार की सहमति के बिना किसी अन्य संगठन का सदस्य बनने का अधिकार नहीं है। यदि उसे बिना सहमति के ऐसा करने की स्वतंत्रता चाहिए तो वह परिवार छोड सकता है, किन्तु परिवार में रहते हुये अनुशासन नहीं तोड सकता। महिला सशक्तिकरण की बीमारी तब शुरु हुई है जब महिला और पुरुष को परिवार की सयुक्त इकाई का सदस्य न मानकर अलग अलग देखा गया। यत्र नार्यस्तु पूज्यंते यदि कभी लिखा गया तो ढोल गवार शुद्रपशु नारी भी तो लिखा गया। यदि दुर्गा, सीता, सावित्री की कभी पूजा हुई तो कभी सुर्पनखा कैकई मंथरा को गालियॉ भी दी गई। पूजा विचार की होती है, चरित्र की होती है, कर्म की होती है, जन्म लेने मात्र से कोई किसी व्यवहार का अधिकारी नहीं हो जाता। न सभी महिलाओं का आचरण एक समान है, न सभी पुरुषों का। इसलिए मेरा विचार है कि व्यक्तियों को गुण—दोष के आधार पर अच्छा बुरा समझने की आदत डालिये, न कि समाज तोड़क महिला सशक्तिकरण जैसे नारों में उलझना उचित है।

मंदिर मस्जिद में महिलाओं का प्रवेश उचित है या नहीं इसका निर्णय कौन करेगा? मेरे विचार में इसका निर्णय उस मंदिर मस्जिद की प्रबंधकारिणी समिति पर छोड देना चाहिए। यदि कोई प्रबंधकारिणी समिति गलत करती है तो उसे बदलने की व्यवस्था होनी चाहिये और यदि वह भी संभव न हो तो आप पृथक से कोई ऐसा धर्म स्थान बना सकते है जो आपके द्वारा बनाये गये नियमों के आधार पर संचालित हो। सबरीमाता मंदिर में महिलाए प्रवेश करे या नहीं इसका निर्णय मंदिर के 50 या 100 किलोमीटर के अन्तर्गत आने वाले हिन्दू महिला पुरुष मतदान द्वारा कर सकते है। ऐसे निर्णय में सरकार न्यायालय अथवा बाहर के लोगों का हस्तक्षेप क्यों होना चाहिए? हिन्दू धर्म पुरुष या नारी में भेद नहीं करता यह बात सही है किन्तु इसका निर्णय,हिन्दू पुरुष हिन्दू महिलाएँ मिलकर या हिन्दू परिवार बैठकर करेंगे या कोर्ट। किसी न्यायाधीश ने यदि कह दिया कि भगवान शिव हमेशा शक्ति के साथ चलते रहे है, तो क्या हम मान ले कि न्यायालय शिव और पार्वती के अस्तित्व को स्वीकार करता हैं । मेरे विचार से आपने जो प्रश्न किया है वह स्वयं में समाज तोडक विचारों के प्रचार से प्रभावित होकर लगता है। मैं फिर से स्पष्ट कर दूँ कि महिलाओं और पुरुषों को संविधान ने व्यक्ति के रुप में समान अधिकार दिये है। किन्तु आपसी सहमति से किसी संगठन का सदस्य बनते ही उनके अधिकार तब तक असमान हो सकते है जब तक उनमें सहमति है। जब उन्हें व्यक्ति के रुप में समान संवैधानिक अधिकार प्राप्त है तो यह कैसे संभव है कि किसी भी व्यक्ति को महिला होने के आधार पर विशेष अधिकार देना संविधान विरुद्ध नहीं है। भारतीय संविधान को संवैधानिक मामलों तक ही व्याख्या करने या हस्तक्षेप करने का अधिकार होना चाहिए और न्यायपालिका को भी व्यक्ति के मूल अधिकार या संवैधानिक अधिकार तक ही हस्तक्षेप करना चाहिए। न्यायालय कोई सर्वशक्तिमान इकाई नहीं है जो व्यक्ति के धार्मिक सामाजिक या स्वैच्छिक अधिकारों की भी व्याख्या कर सके। श्रृष्टि के सुचारु संचालन के लिए महिला और पुरुष के बीच आपसी सहमति अनिवार्य है। यदि किसी परिवार या अधिकांश परिवारों में महिला के साथ अत्याचार होता है तो ऐसी परिस्थिति में अत्याचार करने वाले को समझाना एक मार्ग है और यदि फिर भी संभव न हो तो दोनों को अलग अलग होने की छूट हो सकती है। किन्तु किसी भी परिस्थिति में परिवार में रहते हुए महिला को भडकाना पूरी तरह समाज विरोधी कार्य है। ऐसी महिलाओं को जो अन्य परिवारों की महिलाओं को भडकाने का काम करती है उन्हें न्यायालय से दण्डित किये जाने की व्यवस्था होनी चाहिए। यदि पुरुष भी ऐसा करें तो उनके लिए भी दण्ड की व्यवस्था हो। पति पत्नि के बीच संदेह की दीवार खडा होना बहुत अधिक घातक होगा। यह विषय संवेदनशील है तथा इस विषय पर राजनीति करना बहुत नुकसान करेगा। मैं पुनः चाहूँगा कि आप ज्ञानतत्व 312 पढ़कर ही फिर से प्रश्न करें।

3.नरेन्द्र सिंह, बुलंदशहर,उ0प्र0

समाज के परिप्रेक्ष्य में धर्मनिरपेक्षता सार्थक या निरर्थक?

यथार्थ में हम अपने सामाजिक ढॉचे का आकलन करते है तो पाते हैं कि हमारा राजनैतिक और धार्मिक नेतृत्व समाज को अपनी सत्ता स्थापना के लिए लगातार वर्ग संघर्ष के लिए गुमराह कर रहा है। इसे विडम्बना कहना ही ठीक रहेगा कि मानव सभ्यता के इतिहास में सहिष्णुता व निरपेक्षता को अपनी जीवन चर्या से स्फुर्त करने वाला भारतीय समाज, आज उधार के दर्शन का अनुसरण कर अपनी संस्कृति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है। यह उधार का दर्शन क्या है? इस समय मैं धर्म निरपेक्षता के

अस्तित्व पर प्रश्न कर रहा हूँ, क्योकि यह धर्म निरपेक्षता ,जिसे भाषाविदों ने सैक्यूलरिज्म के मायने के रुप में तब्दील किया है, उन्होनें धर्म व संगठन के गुणधर्म में कोई अन्तर नहीं किया। या यूँ कहें कि दुनियां को सैक्यूलरिज्म अथवा तथाकथित धर्म निरपेक्षता को जन्म देने वाले आधुनिक सभ्यता के मार्गदर्शको ने धर्म व संगठन के दर्शन को समझा ही नहीं था। दुनिया का कोई भी व्यक्ति इस विषय का अनुसंधान करे और यह सिद्ध करे कि कोई भी संगठन किसी अन्य संगठन से स्पर्धा के समय निरपेक्ष रह सकता है क्या? क्योंकि उसने यदि ऐसा किया तो निश्चित रुप से उसका अस्तित्व अन्य संगठनों के समक्ष गौण हो जाएगा और कोई भी संगठन भला अपने अस्तित्व को समाप्त कैसे होने दे सकता है? दुनिया भर में धर्म निरपेक्षता का दर्शन विभिन्न कथित धार्मिक (साम्प्रदायिक) संगठनो के संघर्ष के समय समाज के वर्गो का निरपेक्षता पूर्वक मार्गदर्शन नहीं कर पाता है और समाज जगह–जगह पर साम्प्रदायिक संघर्षो का शिकार हो जाता है। मूलतः मैं यहॉ पर यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हमे समाज को निरपेक्ष बनाने के सतत प्रयास करने चाहिए। यदि हम ऐसा कर पाए तो समाज से साम्प्रदायिकता का अस्तित्व स्वतः ही समाप्त हो जाएगा और समाज धर्माचरण से ओत–प्रोत हो जाएगा। यद्यपि यह कार्य व्यक्ति मात्र के लिए दुर्लभतम लक्ष्य की तरह है जिसे प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है। लेकिन समाज के विभिन्न पन्थों को, जिन्हें हम कथित तौर पर धर्म के रुप में स्वीकार करते है ं, उनके झण्डाबरदारों को धर्म के दर्शन की मीमांसा करनी चाहिए और उस मीमांसा के परिणाम स्वरुप जो सार्वभौमिक सिद्धान्त प्राप्त हों उसे समाज को संयुक्त रुप से पालन करने का निर्देश देना चाहिए।

इस विषय को और भी विस्तार पूर्वक समझने के लिए मै ं भारतीय दर्शन के वैचारिक प्रभाव को स्वीकार करना श्रेयष्कर समझता हूँ कि उसने धर्म का प्रत्यक्षीकरण किस प्रकार किया है! यह हमें स्पष्ट शिक्षा देता है कि धर्म की कोई निश्चित आकृति नहीं होती, बल्कि यह तो देशकाल परिस्थिति के अनुसार अपनी आकृति धारण करता है। लोकतन्त्रीय राज्य में धर्म, न राज्य को निर्देशित करता है और न राज्य से अपने लिए निर्देश पाता है। इस सिद्धान्त का समाज की आकृति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। क्योंकि जो अवधारणा समाज को वर्ग में विभाजित कर देती है उसे पन्थ अथवा सम्प्रदाय ही कहा जा सकता है, धर्म का इससे कोई सम्बन्ध नही ं होता। मुझे नहीं पता कि दुनिया ं में इस धर्म निरपेक्षता (सैक्यूलरिज्म) नाम के शब्द की व्युत्पत्ति कब और किस प्रकार हुई! क्योंकि समाज के सार्वभौमिक अर्थ को समझते हुए जीवन में मैंने धर्म के जिस दर्शन को स्वीकार किया है उसमें किसी पन्थ एवं जाति की अपेक्षा में न तो व्यक्ति का स्वतन्त्र अस्तित्व गौण होता है और न समाज का। जरा समाज के मूल स्वरुप को समझते हुए, व्यक्ति, मात्र समाज के सन्दर्भ में, धर्म के दर्शन को प्रत्यक्ष तो करें, और वह स्वयं से पूछे कि धर्म क्या है? क्योंकि जब तक दुनियां में सम्प्रदायवाद की अभिरक्षा के लिए धर्म को अनावश्यक रुप से निरपेक्ष कहने की गलती की जाती रहेगी तब तक जनसामान्य धर्म के गुण प्रधान स्वरुप को समझ ही नहीं पाएगा। धर्म कोई सम्प्रदाय या पन्थ नहीं होता है जो कभी इसे निरपेक्ष कहने या बनाने की कोशिश करनी पड़े। यदि निरपेक्षता के सन्दर्भ में ही धर्म को देखा जाए तो यह समाज का इस प्रकार मार्गदर्शन करता है कि इससे निरपेक्षता स्वतः ही उत्पन्न होती है। निरपेक्षता का यही भाव, समाज में किन्ही ं भी घटनाओं वश उत्पन्न हुए पन्थ, वर्ग और जातियों को निरपेक्ष बना कर समाज में विलीन करने का मार्ग प्रशस्त करता है। लेकिन समाज पर सत्ता की स्थापना के लिए तथाकथित धर्म रक्षकों और राजनीतिकों ने धर्म के मूल स्वभाव को विष्मृत करके तथा सम्प्रदाय व पन्थ को धर्म के रुप में महिमामण्डित करके समाज के मूल स्वरुप को ही नष्ट कर दिया। मै ं आधुनिक समाज के विभिन्न घटकों से यह प्रश्न करना चाहता हूँ कि विभिन्न अवसरों पर अपनी–अपनी संगठनात्मक पहचान को अनावश्यक रुप के परिलक्षित करते हुए क्या किसी पक्षहीन (वर्गहीन) समाज की रचना की जा सकती है? सम्प्रदाय एवं पन्थ के सन्दर्भित अर्थो को ध्यान में रखते हुए हमें निरपेक्षता की परिभाषा पर जरा चिन्तन करना चाहिए। किसी पन्थ का कोई अवधारक जब अन्यों की अवधारणा, भावना, परम्परा एवं सामाजिक ढांचे के विरुद्ध कार्य करता है तो पहले उसे यह विचार भी कर लेना चाहिए कि ऐसा करके उसके सामने क्या परिणाम आने वाला है। क्योंकि हम समाज को यदि निरपेक्ष बनाना चाहते है तो हमे पन्थ के महत्व को मृतप्राय करना ही होगा। अन्यथा पन्थ, जाति और वर्ग के आधार पर राजनीति करने वाले लोग समाज के वर्गो को ऐसे रास्तों पर जाने के लिए गुमराह करते रहेंगे। क्या हमारा आधुनिक समाज ऐसे ही परिवेश में जीवन व्यतीत करता रहेगा? प्रत्येक व्यक्ति को इस विषय पर अवश्य विचार करना चाहिए।

उत्तरः– जब किसी शब्द के गुण वाचक स्वरुप की समाज में प्रतिष्ठा बढने लगती है तो गुणहीन लोग उस शब्द या पहचान को अपने साथ जोडकर उसका स्वरुप विकृत कर देते हैं। यह तिकडम पुराने समय से चली आ रही है और आज तक जारी है। जब साधु संन्यासी को प्रतिष्ठा मिलने लगी तब राक्षसो ने भी साधु संन्यासी के कपडे पहनने शुरु कर दिये। आज भी अनेक गुणविहीन नेता गेरुवा वस्त्र पहनकर राजनीति या व्यवसाय करते मिल जाते है। इसी तरह जब दुनिया में लोकतंत्र शब्द की प्रतिष्ठा बढी तब साम्यवाद ने भी अपने साथ लोकतंत्र या जनतंत्र शब्द जोड लिया। जब समाज शब्द धर्म राजनीति या व्यवसाय की तुलना में अधिक प्रतिष्ठित तथा महत्वपूर्ण प्रभावोत्पादक हुआ तब कुछ लोगों ने समाजवाद शब्द पैदा करके समाज शब्द का अर्थ विकृत कर दिया। इसी तरह धर्म शब्द के साथ भी हुआ और साम्प्रदायिक संगठन अपने को धर्म कहने लगे। धर्म का अर्थ होता है – किसी अन्य के हित में किया जाने वाला निःस्वार्थ कार्य। धर्म आमतौर पर आपसी संव्यवहार तक सीमित होता है। धर्म का किसी भी रुप में संगठनात्मक स्वरुप नहीं हो सकता । यदि कोई संगठन है तो वह धर्म हो ही नहीं सकता। क्योकि धर्म तो आपसी संव्यवहार तक सीमित होता है अर्थात धर्म के साथ सिर्फ कर्तव्य ही जुडा होता है। कोई अधिकार नहीं चाहें वह संवैधानिक अधिकार हो, मौलिक अधिकार हो, अथवा सामाजिक अधिकार।

4 नरेन्द्र सिंह जी, संगठन सचिव, व्यवस्थापक, फेसबुक से

प्रश्न :— मैंने 19.4.2016 को फेसबुक में डाले गये आपके लेख अम्बेडकर किस वर्ग के नायक और किस वर्ग के खलनायक का अध्ययन किया। एक विचारक के नजरिये से मैंने इस लेख की समीक्षा की तो मुझे कहीं प्रश्न करने की गुजाइश नहीं मिली। लेकिन मैं आज एक संगठन के प्रतिनिधि के रुप में कार्य कर रहा हूँ। इस तथ्य के आधार पर मैं डॉ अम्बेडकर की कार्य पद्धति और उनके बारे में आपकी समीक्षा का अध्ययन करता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि हम ऐसा करके एक ठोस और उद्देश्यहीन विचारों के संघर्ष की ओर बढ़ रहे है। इससे तो वर्ग संघर्ष ही मजबूत होगा क्योकि अम्बेडकर के अनुयायी इसे स्वीकार नहीं करेंगे।मुझे लगता है कि हमें डॉ अम्बेडकर की विचारधारा से उत्पन्न हुए दोषों के उन्मुलन के लिए उनके चरित्र की आलोचना के स्थान पर समाज में लोकस्वराज्य की स्थापना का ठोस प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा हो सका न केवल डॉ अम्बेडकर के सिद्धांतों द्वारा उत्पन्न दोषों का उन्मूलन हो सकेगा बल्कि ऐसे अन्य लोगों द्वारा कार्य करने का उचित मार्ग दर्शन भी प्राप्त होगा।

उत्तरः—आप व्यवस्था परिवर्तन से जुडे हुए है तथा मैं ज्ञानयज्ञ परिवार से। यद्यपि दोनों अप्रत्यक्ष रुप से एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्यक्ष रुप से दोनों की कार्यप्रणाली भी अलग है तथा संगठन भी। व्यवस्था परिवर्तन अभियान चार मुद्दों पर जनमत जागरण तक सीमित है। आपका मुख्य कार्य है समाज और राज्य के बीच अधिकारों के विभाजन की पुनः समीक्षा होने की परिस्थितियॉ पैदा करना। जबकि ज्ञानयज्ञ परिवार का मुख्य कार्य यह है कि नई सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, पारिवारिक या अन्य प्रकार की प्रस्तावित व्यवस्था की रुपरेखा बनाना। व्यवस्था कैसी होनी चाहिए और यदि हम सबको अवसर मिला तो परिवर्तित व्यवस्था कैसी होगी इस पर विचार मंथन करना। इसका अर्थ हुआ कि ज्ञानयज्ञ परिवार अभी से ही नई व्यवस्था के प्रारुप पर विचार मंथन जारी रख रहा है।

मैं समझता हूँ कि अम्बेडकर जी की समीक्षा में प्रस्तुत मेरे विचार कुछ अंश में आपके साथियों को नाराज भी कर सकते है? वैसे भी आपके संगठन से मेरे लेख के पक्ष विपक्ष पर कोई संबंध नहीं है। आपके चार मुद्दों में ऐसी कोई बात नही है जो इस लेख के पक्ष विपक्ष से संबंध रखती हो।

मैनें अम्बेडकर जी की किसी भी मामले में व्यक्तिगत आचरण की समीक्षा नहीं की है। उनका खान पान रहन सहन या अन्य व्यक्तिगत कार्यो को मैंने कहीं नहीं छुआ है। किन्तु उन्होने राजनैतिक पद प्राप्त करने के बाद उस पद का दुरुपयोग किया तो उसकी चर्चा तो होनी ही चाहिए। अम्बेडकर जी ने पॉच काम ऐसे किये जो मेरी दृष्टि में गलत थे —1. महिला और पुरुष को अलग अलग वर्गो में बांटना। 2. श्रम को धोखा देकर बुद्धिजीवियों की सुविधाओं का विस्तार। 3. गावों की कीमत पर शहरों को प्रोत्साहित करना। 4. प्रारंभिक जीवन में ही हिन्दू धर्म छोडने की घोषणा करने के बाद लगातार हिन्दू धर्म के विरुद्ध षडयंत्र करना। 5. ऐसे संविधान का निर्माण जो समाज को कमजोर तथा राज्य को लगातार शक्तिशाली बनाता रहे। आप विचार करिये कि इन पॉच कार्यो के बाद भी हम अम्बेडकर जी को खलनायक क्यों न कहें। मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि अम्बेडकर जी के मन में हिन्दुत्व के प्रति प्रतिशोध का भाव था जबकि नेहरु जी के मन में हिन्दुत्व के प्रति निरपेक्ष भाव था तथा गॉधी जी के मन में सुधार भाव। कोई भी व्यक्ति कोई भी भाव रखने के लिए स्वतंत्र है किन्तु किसी भी व्यक्ति को अपनी भावनाओ के आधार पर किसी राजनैतिक पद के दुरुपयोग का अधिकार नहीं। अम्बेडकर जी ने ऐसा किया।

आप समझते है कि ऐसा लिखने से बुद्धिजीवी, राजनेता, अल्पसंख्यक, महिलाएँ, तथा धर्म निरपेक्ष लोग नाराज हो जायेंगे। मुझे ऐसा लगता है कि इन वर्गो में भी अनेक लोग ऐसे है जों नहीं जानते कि वे गलत कर रहे है। अनेक बुद्धिजीवी श्रमशोषण नहीं करना चाहते, अनेक राजनेता समाज को गुलाम बनाकर नहीं रखना चाहते। अनेक महिलाए अलग वर्ग के रुप में खडी नहीं होना चाहती।किन्तु अनजाने ही यह सब जो हो रहा है तथा इन सब वर्गो के कुछ लोग भीमराव अम्बेडकर की प्रशंसा करके अपने अपने उद्देश्य प्राप्त करने की दिशा में सफल हो रहे है तो यह असत्य इन वर्गो के अन्य लोगों तक जाना ही चाहिए। यदि सच्चाई सामने आयेगी तो ऐसे वर्गो में से भी अनेक लोग आगे विचार करना शुरु करेंगे इसलिए मैं समझता हूँ कि हमें सच्चाई को समाज के समक्ष रखना चाहिए।

5.नारायण कौरव, नरसिंहपुर, म0 प्र0

प्रश्नः— राज्य का एक और दायित्व अंधविश्वास फैलाने वालों को रोकना भी होना चाहिए आज समाज में लोग अपने व्यवसाय के कारण किसी भी तरह का अंधविश्वास फैला रहे है। यहॉ तक कि कुछ बाबाओं ने जडियों से कैंसर एड्स जैसे रोगों को ठीक करने तक का ढिंढोरा पीटा और लोगों को ठगा क्या राज्य का दायित्व नहीं कि ऐसे दावों का वैज्ञानिक परीक्षण हो?

उत्तरः— यदि अंधविश्वास भी राज्य ही रोकेगा तो समाज क्या करेगा? देश के साधु संत क्या करेंगे? आप और हम क्या करेंगे? जो राज्य चोरी, डकैती, आतंकवाद, मिलावट, बलात्कार जैसे अपराध न रोक पर रहा हो, उस व्यस्त राज्य को अंधविश्वास रोकने का दायित्व देना उचित नहीं। जो काम समाज कर सकता है वह समाज करे और जो काम समाज नहीं कर सकता उतना ही राज्य पर छोड़ना चाहिए।

खबरें इस पखवाड़े की

1—समाचार है कि जे एन यू के छात्रनेता कन्हैया कुमार ने हवाई जहाज में बैठते समय मामूली सी घटना के तिल का ताड़ बनाकर दुरुपयोग करने का प्रयास किया जो बाद में असत्य सिद्ध हुये।

उत्तरः— कन्हैया कुमार अब छात्रनेता नहीं है बल्कि अपने को नेताओं का भी नेता मान रहा है। अब तक कई बार नेताओं के समान नाटक करके वह चर्चा में आने में सफल रहा। इस बार फस गया यह अलग बात है। किन्तु नेता लाख बार पकडे जाने के बाद भी कभी अपना नाटक नहीं छोडते और उम्मीद है कि कन्हैया भी अब नेता बन गया है। यही कन्हैया कुछ माह पूर्व जे एन यू प्रबंधन की सर्वोच्चता की दुहाई दे रहा था। अब प्रबंधन ने कन्हैया कुमार को दोषी सिद्ध करके दण्डित कर दिया है तो अब वहीं कन्हैया प्रबंधन के खिलाफ भी आन्दोलन की धमकी दे रहा है। संदेह होता है कि यदि भारत में साम्यवादियों की सरकार रही होती तो ऐसी घटना का क्या स्वरुप होता?

2—समाचार है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश ने एक बैठक में दुखी मन से यह व्यक्त किया कि न्यायपालिका को इतना ओवरलोडेड कर दिया गया है कि जज पूरी ताकत से काम करने के बाद भी न्याय देने में असफल हो रहे है। यदि न्यायाधीशों की पर्याप्त संख्या नहीं बढाई गई तो लोगों का न्याय पर से विश्वास उठ जायेगा।

उत्तरः—न्यायपालिका को ओवरलोडेड किया गया या उसने स्वयं विधायिका के कार्य अपने हाथ में लेकर ओवरलोडेड हो गई यह विचारणीय है। न्यायाधीश जब अपनी कुर्सी पर बैठता है तब अपने को तानाशाह से नीचे कुछ नहीं समझता। उस समय तो वह राष्ट्रपति के पद तक की आलोचना कर देता है, अपने सामने खड़े पुलिस वाले को गुलाम से अधिक कुछ नहीं समझता, और जब दूसरी कुर्सी पर बैठता है तब उसे जमीन दिखती है। ऐसी स्थिति में यदि वह वास्तव में भी रोता है तो सामने वाला उस रोने को नाटक से अधिक कुछ नहीं समझता। यदि गलती से भी न्यायाधीशों की संख्या बढ़ा दी गई और न्यायपालिका ने विधायिका के अन्य कार्यो को भी अपने पास समेट लिया तो इसका नुकसान देश को ही उठाना पढेगा। न्यायपालिका सर्वोच्च बनने की प्रतिस्पर्धा में ऐसा गलत कदम उठा रही है। स्वतंत्रता के बाद तंत्र ने लोक को गुलाम बनाकर रखा है। पचास वर्षो तक तंत्र के एक भाग विधायिका सर्वोच्च रही। 15 वर्षो तक न्यायपालिका ने विधायिका की सर्वोच्चता को चुनौती दी। अब कुछ वर्षो से न्यायपालिका अपने को सर्वोच्च मानने लगी है। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि ये तीनो मिलकर लोक को सर्वोच्च मानना शुरु कर दे ंतो सारा झगडा अपने आप खत्म हो जायेगा।

3—समाचार है कि केन्द्रीय जांच एजेंसी के अनुसार अब कर्नल पुरोहित निर्दोष भी हो सकते है। यह भी संभव है कि पिछली सरकार ने जानबूझकर इन्हें फसाया हो।

उत्तरः— पिछले 7—8 वर्षो में सिर्फ सरकार बदली है। न सी बी आई बदली है, न ही न्यायपालिका। यह विश्वास करना कठिन है कि यदि सी बी आई पिछली सरकार के दबाव में आकर किसी दोषी को बचाने और निर्दोष को फसाने का काम कर रही थी तो यह भी तो संभव है कि सी बी आई सरकार बदलते ही नई सरकार के दबाव में किसी दोषी को बचाने और निर्दोष को फसाने का प्रयत्न कर रही हो।

4—समाचार है कि भारतीय जनता पार्टी और उसकी सरकार लगातार यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर रही है कि इशरतजहॉ एक आतंकी संगठन की सदस्य थी तथा आतंकी घटना के उद्देश्य से सक्रिय थी। दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी और उसकी पिछली सरकार लगातार यह सिद्ध करने का प्रयत्न करती रही है कि इशरतजहॉ को पकड़कर कहीं गुप्त जगह पर लेजाकर फर्जी मुठभेड में मार दिया गया।

उत्तरः— मुझे ऐसा लगता है कि दोनो ही बाते सच है। यदि किसी मृत्युदण्ड दिये जाने लायक अपराधी को बिना न्यायालय में प्रस्तुत किये फर्जी मुठभेड में मार दिया जाये तो यह कार्य सिर्फ गैर कानूनी होता है, कोई अपराध नहीं। यह समाज के लिए कोई चिंता का विषय नहीं है। यदि न्याय और कानून कहीं आपस में टकराते हो तो संविधान कानून की रक्षा करेगा और समाज न्याय का पक्ष लेगा। यदि मुठभेड फर्जी थी तो कानून उस संबंध में अपना काम करेगा और इशरतजहॉ आतंकी थी तो फर्जी मुठभेड की समाज सराहना करेगा।

5— समाचार है कि केन्द्रीय मंत्री महेश शर्मा ने कहॉ है कि भारतमाता की जय न बोलने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही पर विचार किया जा रहा है।

उत्तरः— जो लोग अपना काम ठीक से न कर पाते हो वे सुर्खियों में बने रहने के लिए ऐसी ऐसी बेसिर पैर की बातें करते रहते है। महेश शर्मा जी न आतंकवाद की चिंता कर रहे है न नक्सलवाद की। अब इस संबंध में मैं और क्या कह सकता हूँ? पता नही ंशर्मा जी इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता सिद्ध करने के पीछे क्यों लठ लेकर पडे है। कोई व्यक्ति भारतमाता की जय कहें या हिन्दुस्तान जिन्दाबाद कहें तो इसमें इतना ज्यादा जोर देने की क्या जरुरत है?

6—समाचार है कि रायपुर छ0ग0 के जिलाधीश ने घोषणा की है कि दालों के बढते मूल्य के कारणों की जॉच करायी जायेगी।

उत्तर– और साथ में प्याज के घटते मूल्य के कारणों की भी जॉच क्यों नहीं करा लेते। अपना काम न करके दूसरे के कामों की चिंता करना कोई अच्छी आदत नहीं है । नेताओं की तो मजबूरी है कि वे लोकहित की तुलना में लोकप्रिय मुददों को उठाने की पहल करें। किन्तु आपको तो चुनाव नहीं लडना है तो आप क्यों लोकप्रिय मुददों के पीछे पडे हैं?

7–समाचार है कि इटली की अदालत ने निर्णय दिया है कि भारत के साथ हेलीकॉप्टर सौदे में भारत के कुछ अधिकारियों और नेताओं ने मिलकर हेलीकॉप्टर सप्लाई करने वाली कंपनी से एक सौ पच्चीस करोड की घूस ली थी। इस घूसखोरी में घूस देने वालों को इटली के न्यायालय ने दण्डित भी किया है।

उत्तरः– यह सही है कि यह मामला वर्तमान समय में सर्वाधिक चर्चित मामला बन चुका है। घूस लेने वालों में सोनिया जी का भी नाम आ रहा है। सोनिया गॉधी ने इस चर्चा के उत्तर में मात्र यह कहा है कि 1. वे ऐसे आरोपो से डरने वाली नहीं है। 2. उनके पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है। 3. यूपीए सरकार ने ही जानकारी होते ही सौदा रद कर दिया और रकम जप्त कर लीं। 4. एन डी ए सरकार आने के बाद उसी कम्पनी से पुनः व्यापार करना शुरु कर रही है। 5. दो वर्ष बीतने के बाद भी अब तक सरकार ने कोई जॉच क्यों नहीं की।

ये सारे प्रश्न सोनिया गॉधी को निर्दोष सिद्ध नहीं करते। आज तक लालू यादव ने भी ऐसे ही उत्तर दिये थे तथा हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला ने भी। आमतौर पर भारतीय राजनेता जेल जाने के बाद भी ऐसे ही उत्तर देता है। अभी तो सोनिया जी के लिए यह पहला दूसरा ही अवसर है। मैं किसी से नही डरती यह जुमला इंदिरा गॉधी का था और वह नाटक न होकर सच भी था। क्योकि वह तानाशाह थी। मेरे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है यह जुमला मनमोहन सिंह का था और वे वास्तव में ईमानदार प्रमाणित हुए। सोनिया जी ऐसे जुमलों की नकल करके पाकसाफ प्रमाणित नहीं हो सकती। सच्चाई यह है कि एके एन्टोनी ने कार्यवाही करके अपनी ईमानदारी प्रमाणित की थी और हो सकता है कि एन्टोनी के कदम को मनमोहन सिंह का भी समर्थन प्राप्त हो। यह भी संभव है कि उस समय सोनिया जी को यह आभाष न रहा हो कि भविष्य में परिस्थितियॉ इस कदर बदल जायेंगी और यह सोचकर उन्होने कोई हस्तक्षेप न किया हो अथवा उन्हें लगा होगा कि एन्टोनी और मनमोहन सिंह इस मामले में अंधेरे में ही रहे तो अच्छा है। सच्चाई चाहे जो भी हो किन्तु सोनिया गॉधी की नाव डूबने की कगार पर है। उस नाव में बैठे सोनिया गॉधी के सिपहसालार सोनिया के चारों ओर इक्टठे होकर सोनिया के पक्ष में चिल्ला रहे है। किन्तु यह भी सच है कि धीरे धीरे वे डुबती नाव से कुदने की तैयारी भी कर रहे है। पहली बार सोनिया गॉधी की ईमानदारी पर इतना गंभीर संदेह पैदा हुआ है। इसका उत्तर यह नहीं है कि वर्तमान सरकार भी संदेह के घेरे में है। क्योकि सोनिया गॉधी को सिर्फ सत्ता पक्ष को ही उत्तर नहीं देना है बल्कि समाज को भी उत्तर देकर सन्तुष्ट करना होगा। अभी तो यह मामला और भी कई मोड लेगा।